

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१५/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप में बैठें... देखिए अपना मूल स्वरूप... अपने मूलस्वरूप को अनुभव करें... अपने मूलस्वरूप को स्पष्टता से देखने की कोशिश करें - चमकता हुआ सितारा... 'यह मैं हूँ'... अनुभव करें अपने मूल स्वरूप को... स्पष्टता से देखने की कोशिश करें... यही मूल स्वरूप आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों को चलाता है...

सभी आत्माएं चेक करें, पूरे दिन में आप जो कर्म करते हो, जहां-जहां जाते हो, जो-जो व्यवहार करते हो, चेक करें - यह किसकी ऊर्जा से सब होता है? कहां से ऊर्जा आती है आपका हर कर्म करने की, आपके शरीर के सभी अंगों को, सभी कर्मेन्द्रियों को चलाने की? यह ऊर्जा कहां से आती है? और क्या हर दिन आपका शरीर उसी प्रकार से चलता है या कभी ऊपर-नीचे होता है? क्या हर दिन में आपका व्यवहार सभी के साथ वैसा ही चलता है या कुछ बदलाव होता है? यह सब कहां से चलता है? किसकी ऊर्जा से चलता है? आपका हर कर्म, हर व्यवहार - फिर वह बाहरी कर्म हो या आपके शरीर का कोई भी कर्म हो, शरीर के हर कर्मेन्द्रियों को चलाने का, चलने का कर्म हो - इन सब को उर्जा आत्मा से मिलती है। पर हर कोई चेक करे कि मुझ आत्मा के पास क्या पर्याप्त ऊर्जा है? हर कोई अपनी चेकिंग करे। अगर आत्मा अपनी मूल अवस्था, मूल स्थिति में होगी, तो आत्मा के सभी सूक्ष्म कर्मेन्द्रियां, स्थूल कर्मेन्द्रियां, बहुत बेहतरीन रूप से चलेंगे, क्योंकि यह सब आत्मा की उर्जा से चलते हैं। उसी प्रकार आत्मा अपने मूलस्वरूप में होगी, अपने मूल स्थिति में होगी, तो उसका हर कर्म, हर व्यवहार, जो शरीर द्वारा किया जाता है, वह सुखकारक होगा।

संसार में कोई अगर कहते हैं कि वह दुखी है, उसका मतलब क्या है? वह जो आत्मा है उनके पास पर्याप्त ऊर्जा नहीं है हर प्रकार के सुख को पाने की, उसे भोगने की। इसलिए ऊर्जा के अभाव के कारण दुख है। उसके विपरीत, पर्याप्त ऊर्जा के कारण ही जीवन में सुख होता है। हर प्रकार का सुख हो या दुख हो, उसका एक ही मूल कारण है – ऊर्जा, आत्मा की ऊर्जा। हर कोई चाहता है, मेरे अंदर दिव्य गुण आए। मेरा हर कर्म, जो दूसरों के लिए होता है वह सुखकारक हो, मेरे हर विचार शुद्ध रहें, मेरी बुद्धि शुद्ध रहे, मेरे अंदर देवताई संस्कार रहें। पर यह सब कब आएगा? इसके लिए कोई बाहरी प्रयास करना नहीं पड़ता। इसके लिए सिर्फ आत्मा को अपनी मूल स्थिति में, मूलस्वरूप में आने का प्रयास करना है, क्योंकि सुख भी एक ऊर्जा है, दुख भी एक ऊर्जा है। जैसे-जैसे आत्मा अपने मूल अवस्था में आती जाएगी, अपने आप आत्मा के पास पर्याप्त ऊर्जा होती जाएगी और उन्ही ऊर्जाओं से आत्मा के अंदर जो सभी गुण शक्तियां हैं, वह उनका काम कर पाएंगे। शान्ति एक गुण है, पर उसको ऊर्जा आत्मा से मिलती है। प्रेम, सुख, शक्ति, आनंद, दिव्य गुण, अष्ट शक्तियां, सभी को ऊर्जा आत्मा से मिलती है। आत्मा अपने स्थिति में जैसे जैसे आती जाएगी, यह सभी भी अपने स्थिति में आते जाएंगे।

कोई किसी को कभी कहते हैं, कि आप प्रेम से व्यवहार करो, आप शान्ति से व्यवहार करो। इसका मतलब सामने वाला अपने कर्मेन्द्रियों के द्वारा शान्ति या प्रेम इस व्यवहार में आने का अगर प्रयास करेगा, तो वह व्यर्थ हो जाएगा, क्योंकि शान्ति को ऊर्जा आत्मा से मिलती है। आत्मा के पास पर्याप्त ऊर्जा होगी, तो शान्ति के गुण से वो अपने आप, उसके कर्म, उसके कर्मेन्द्रियों के द्वारा शान्त स्वरूप व्यवहार के होंगे। बाहरी रूप से शान्ति से बात करना, वह एक टेम्पररी प्रयास होगा, वह ज्यादा समय नहीं चल पायेगा क्योंकि मूल जो आत्मा है, वही मूल स्थिति में ना होने के कारण शान्ति के गुण को ऊर्जा ही नहीं मिलेगी और उसके कारण व्यवहार भी शान्ति पूर्वक नहीं होगा।

सभी गुण शक्तियां आत्मा के ही ऊर्जा से चलते हैं। इसलिए सभी आत्माओं को सबसे पहले अपने मूल स्वरूप में आने का अभ्यास करना चाहिए। आप आपके जीवन में, आपके संस्कारों में जो जो परिवर्तन करना चाहते हैं, वह सारा परिवर्तन इस ही एक मूल स्वरूप स्थिति में है। जैसे जैसे आत्मा अपने

मूल स्वरूप स्थिति में आती जाएगी, उसके सभी गुण शक्तियां जागृत होते जाएंगे। आत्मा के अंदर सभी गुण शक्तियां हैं, पर आत्मा स्थिति में ना होने के कारण वह सभी सुप्त अवस्था में पड़े हैं। हर कोई चेक करें, मेरे अंदर कौनसे गुण की कमी है? उस अनुसार जैसे जैसे आप आपकी चेकिंग करेंगे और मूल स्वरूप का अभ्यास बढ़ाते जाएंगे, अपने आप आपको आपके अंदर उस गुण या शक्ति को लेके परिवर्तन दिखेगा। आपके अंदर का वह गुण जागृत होकर अपने सेवा में लगेगा। यह सभी गुण शक्तियां आत्मा के सेवाधारी हैं, आत्मा मालिक है, पर मालिक स्थिति में ना होने के कारण, सभी गुण शक्तियां अपने स्थिति में नहीं हैं। जैसे जैसे आत्मा खुद ही खुद का कंट्रोल लेती जाएगी, मूलस्वरूप में आते आते, वैसे वैसे आत्मा मालिक के पास सभी गुण शक्तियों का कंट्रोल आता जाएगा।

संगम युग में यह एक ही अभ्यास होता है, कि आत्मा संपूर्ण रूप से स्वराज्य अधिकारी बने। आत्मा अपने सभी गुण शक्तियों का कंट्रोल अपने पास लेके, उन सभी को अपनी आर्डर में चलाए। यह सिर्फ संगम युग में ही होता है। अभी यहाँ आत्मा अपने जिन-जिन कर्मेन्द्रियों के ऊपर, सूक्ष्म कर्मेन्द्रिया - मन, बुद्धि, संस्कार के ऊपर, गुण शक्तियों के ऊपर, दिव्य गुणों के ऊपर, अपना कंट्रोल प्राप्त करेगी, उस अनुसार अगले युगों में, अगले जन्मों में वह पार्ट बजा पाएगी। हर कोई चाहता है कि उनका अगला जन्म श्रेष्ठ हो, सतयुग से लेकर कलयुग अंत तक का उनका पूरा पार्ट सुखकारक हो। पर यह कब होगा? जब इस ही संगमयुग में आत्मा स्वराज्य अधिकारी बन पाएगी। जो कुछ करना है, वह अभी इस ही युग में करना होगा। अन्त में हर किसी को अपनी रिजल्ट मिलेगी, कौन आत्मा कितनी स्वराज्य अधिकारी बनी? कितना परसेंटेज में बन पाई? पर जब रिजल्ट आऊट हो जाता है, उसके बाद आत्मा कुछ नहीं कर सकेगी, सिवाय पछतावा करने के।

इसलिए इस ही संगमयुग में आत्मा को अपने सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों के उपर संपूर्ण कंट्रोल पाना होगा। जैसे कभी कोई आत्मा किसी दिन कोई पुरुषार्थ पक्का करती है, कि आज हमें चार घंटा बैठना है फिर वो आत्मिक स्थिती के लिए हो, सकाश के लिए हो, याद के लिए हो, तो जब पक्का किया जाता है उसके बाद उस दिन यात्रा कैसे चलती है? क्या उस दिन आपका मन स्थिर होता है? क्या

बुद्धी आपको सहयोग देती है? क्या संस्कार तपस्या के इमर्ज होते हैं? क्या आपका शरीर संपूर्ण रूप से साथ देता है? अगर इनमें से कोई भी साथ नहीं देता, उसका अर्थ है आत्मा अभी भी इन स्थूल और सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों के ऊपर अपना कंट्रोल नहीं पाई है। जिस दिन आत्मा संपूर्ण रूप से सभी गुण-शक्तियां, मन-बुद्धि- संस्कार, स्थूल कर्मेन्द्रियों के ऊपर कंट्रोल पाएगी, उस दिन आत्मा ने जो डिसाइड किया होगा वह हो जाएगा। फिर आत्मा उस शरीर को लेकर 24 घंटे भी पुरुषार्थ कर सकेगी, उसको कोई नहीं रोक सकता। ना शरीर की भूख, ना शरीर की प्यास, ना मन के कोई विचार, ना बुद्धी का कोई व्हिजन, ना कोई विपरित संस्कार, क्योंकि आत्मा ने पूरा कंट्रोल अपने हाथ में ले लिया है। अभी आत्मा जो चाहेगी वही वह सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों से कर पाएगी और यही आत्मा का मुख्य काम है संगमयुग में। यही मुख्य पढ़ाई है जो सभी आत्माओं को पढ़नी है इस ही युग में।

सतयुग में सभी आत्माओं का मन होता है पार्ट बजाने के लिए सबसे पहले पहुँचे। पर कौन कब पार्ट बजाना शुरू करेगा यह उस आत्मा के स्वराज्य अधिकारीपन की स्थिती पर निर्भर होता है। इसलिए तो अष्ट रत्नों की स्थिती अलग होती है, १०८ की अलग होती है, १००८ की अलग होती है, १६१०८ की अलग होती है, ९ लाख की अलग होती है, २ करोड़ आत्माओं की अलग होती है, और ३३ करोड़ आत्माओं की अलग होती है। किसको कौन से स्थान में पार्ट मिलेगा? कौनसे युग में आत्मा आ पाएगी? यह सब कुछ आत्मा के स्वराज्य अधिकारी पन की अवस्था पर संपूर्ण निर्भर होता है। इसमें परमात्मा कुछ मदद नहीं करते। परमात्मा सदैव सभी आत्माओं को समय प्रती समय ज्ञान की समझ देते हैं, शक्ति प्रदान करते हैं, हर प्रकार से समय के प्रती जागरूक करते हैं, और ज्यादा से ज्यादा एक्स्ट्रा शक्ति देकर आत्मा के अंदर ताकत भरते हैं। पर आगे की यात्रा हर कोई आत्मा की अपनी है।

इसलिए कलयुग में भी, जो आत्माएं, जिस शरीर में हैं, कभी कोई आत्माएं, कम्प्लेन ना करे, परमात्मा के प्रति! अभी की जो भी आपकी अवस्था होगी, परिस्थिति होगी, कभी कोई कम्प्लेन ना करें, क्योंकि आप अभी जो हो, जिस अवस्था में हो, उसका मूल कारण है पिछले संगमयुग में आपने आपकी आत्मा की स्वराज्य अधिकारीपन की अवस्था को कहां तक प्राप्त किया था। इसलिए सभी आत्माएं अभी

आने वाले अगले पूरे कल्प के लिए कैसा पार्ट बजाना चाहती है? यह हर कोई अपना अपना चेक करें। हर कोई आत्मा सदा ध्यान में रखें, हर कोई आत्मा को अपनी मूल स्वरूप की अवस्था, स्वराज्य अधिकारी की अवस्था को खुद को ही प्राप्त करना होगा। इस संगम युग में अपने समय को संपूर्ण रूप से सफल करना होगा। बाकि सभी युगों में आत्मा ने बाहरी रूप से बहुत मौज की है। अब इस युग में जो मायावी मौज है उसे संपूर्ण त्यागना होगा और अपने कल्याण की यात्रा की ओर चलना होगा क्योंकि हर कोई आत्मा को अपना कल्याण स्वयं ही करना है।

परमात्मा आएंगे हैं कल्याण का मार्गदर्शन प्रदान करने पर आत्माओं को जागृत होना पड़ेगा, मायावी संसार से बाहर आके अपने कर्तव्य को समझना होगा। अचानक कोई चमत्कार नहीं होगा, आत्माओं को अपने स्थिती के लिए। हर कोई आत्मा सदा ध्यान में रखना, कि आप कोई अचानक स्वराज्य अधिकारी के स्थिती में नहीं आएंगे, आपको अभ्यास करना होगा। जितना जितना मूल स्वरूप में बैठते जाएंगे उतना उतना आपकी सुक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियां आपकी आज्ञा में चलना शुरू होगी। यह कोई एक दिन में अचानक नहीं होना है, इसके लिए लंबे समय का अभ्यास होना आवश्यक है।

अगर आत्माएं चाहती हैं अगले आने वाले कल्प में बेहतरीन पार्ट बजाना है तो इस युग में अपनी कल्याण की यात्रा शुरू करना होगा। कल्याण माना क्या? कि जो मैं आत्मा मेरे मूल अवस्था में थी, मेरे मूल स्वरूप में थी उस मूल स्वरूप की ओर मुझे पहुँचना है। अपने मूल अवस्था की ओर पहुँचना है। आत्माएं मूल स्वरूप स्थिति को गंभीरता में ले यह स्थिति अचानक कोई नहीं देगा। आत्माओं को पढ़ाई करनी होगी, अभ्यास करना होगा, स्वयं को जागृत करना होगा।

रोज़ अपने से सवाल पूछें, कि आज दिन भर में जो भी पुरुषार्थ मुझ आत्मा ने किया होगा, क्या वो कल्याण के लिए पर्याप्त है? क्या वह परिवर्तन के लिए पर्याप्त है? हर कोई आत्मा चेक करें। अगर हर कोई अपना रोज़ का चार्ट देखे कि आज पूरे दिन भर में आत्मा ने यह-यह पुरुषार्थ किया, इन-इन बातों के ऊपर अटेंशन रखा, इन-इन सुक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों के ऊपर अटेंशन रखा क्या यह जो आज के

दिन में किया है, क्या यह पर्याप्त है? क्या इससे कुछ परिवर्तन आया है? जब तक कोई खुद की चेकिंग नहीं करेंगे, तब तक कभी कोई परिवर्तन नहीं हो सकेंगे।

परमात्मा भी आपको आपके अंदर की कमी दिखाए पर फिर भी आप परिवर्तन नहीं हो सकेंगे क्योंकि वह कमी आपको आपके अंदर दिखनी चाहिए। और आत्माएं सभी ध्यान रखना आपको आपके अंदर की कमियां कब दिखेगी? जब आपके अंदर निरहंकारिता का गुण होगा। क्योंकि वह एक ही गुण ऐसा है, जो आपको आपके सभी कमियों को दिखाएगा। और वही गुण आपके सभी कमियों को त्यागने के लिए, छोड़ने के लिए मदद करेगा। आत्मा की यात्रा मूलस्वरूप स्थिति से है। जितना-जितना मूल स्वरूप में बैठते जाएंगे, उतना-उतना निरहंकारिता का गुण आता जाएगा। यह बहुत गुह्य बात है। आत्माएं अगर समझ सकती हैं, तो इस बात को ध्यान से समझें।

इसलिए सबसे पहले है, मूलस्वरूप स्थिति। आज के दिन का सभी आत्माओं के लिए यही होमवर्क है कि पूरे दिन भर में, आप आत्मा जो पुरुषार्थ करती है, जो स्वयं की चेकिंग करती है, जो अटेंशन रखती है, क्या वह आपके परिवर्तन के लिए पर्याप्त है? दूसरा होमवर्क है, हर कोई आत्मा चेक करें, कि अपने अंदर अहंकार कितना है? और निरहंकारिता का गुण कितना आया है? है या नहीं है? और अगर है, तो कितना आया है?

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः